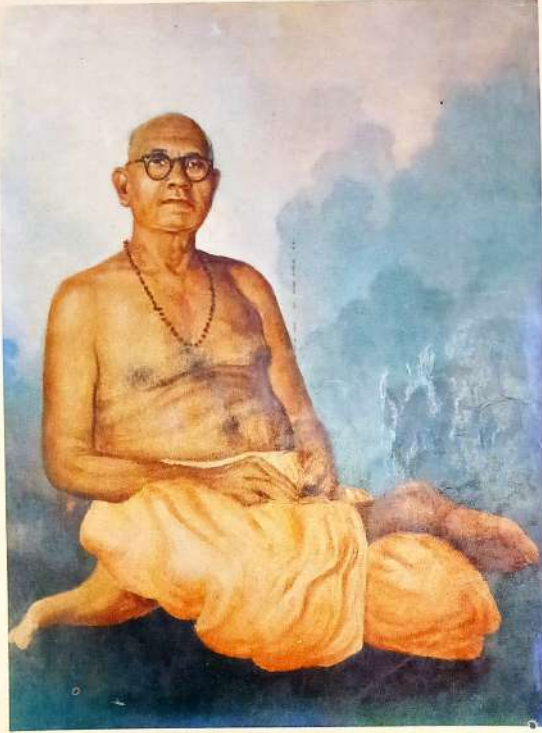


शिवोम् वाणी

(तृतीय खण्ड)



ब्रह्मलीन श्री १००८ स्वामी विष्णुतीर्थ जी महाराज

शिवोम् वाणी

(तृतीय खण्ड)

-स्वामी शिवोम तीर्थ

प्रकाशक :-

नारायण कुटी संन्यास आश्रम

देवास (म. प्र.) ४५५००१

सर्वाधिकार प्रकाशक के सुरक्षित

प्रथम संस्करण

२००० प्रतियां

महाशिवरात्रि

१९९३

मूल्य १० रुपये

मुद्रक :-

श्री निजानन्द ग्राफिक्स

९, संवाद नगर, इन्दौर

समर्पण

प्रतिपत्त स्मरणीय, परम श्रेष्ठ
अन्तर्ज्योति स्वल्प
सर्वज्ञ एवं सर्व व्यापक
मेरे आराध्य देव
श्री श्री सद्गुरुदेव महाराज
के कृपा प्रसाद स्मरण
अन्तरात्मा से उद्भूत
यह पावन पद
श्री गुरुओं में ही
समर्पित

— श्री गोबिन्द



अनुक्रमणिका

क्र	नाम	पृ क्र	क्र	नाम	पृ क्र
१	दो शब्द	२	२८	मेरो मन	३०
२	अब पकड़	४	२९	जीवन	३१
३	तू अपना	५	३०	प्रभु जी	३२
४	नाम का	६	३१	कामी क्रोधी	३३
५	मोहे राम से	७	३२	पिय देखे	३४
६	अब तो	८	३३	मनवा	३५
७	प्रभु से	९	३४	जगत में	३६
८	नाम शक्ति	१०	३५	जल बिन	३७
९	गुरु	११	३६	प्यारे भज ले	३८
१०	सतगुरु	१२	३७	मेरो मन	३९
११	काम क्रोध	१३	३८	राम सो	४०
१२	प्रभु स्वरूप	१४	३९	श्री गुरु	४१
१३	यह मन के	१५	४०	मन तू	४२
१४	मन	१६	४१	मंगल	४३
१५	सोहागन ऐसी	१७	४२	प्रियतम से	४४
१६	सोहागन पी	१८	४३	कब मिल	४५
१७	प्रेम	१९	४४	कोई मो को	४६
१८	प्रभु मोहे	२०	४५	हैं तो	४७
१९	मैं तो	२१	४६	प्रभु तूने	४८
२०	पिय से	२२	४७	जय जय	४९
२१	प्रभु जी	२३	४८	मेरो मन	५०
२२	हैं तो	२४	४९	तू मन में	५१
२३	गुरु बिन	२५	५०	सारी दुनियां	५२
२४	जब	२६	५१	बेखुद	५३
२५	मैं गोविन्द	२७	५२	राह पी दा	५४
२६	माधव	२८	५३	जिधर देखता हूँ	५५
२७	राम भज	२९			

दो शब्द

दिनांक २८ जनवरी १९९३ को शिवोम् वाणी खण्ड द्वितीय का विमोचन हुआ था और फिरइतने शीघ्र ही शिवोम् वाणी खण्ड तृतीय प्रकाशित होने जा रहा है, किसी को भी आश्चर्य चकित कर सकता है। यह आत्म विभोर कर देने वाले, गूढ़ रहस्यमय, अध्यात्म की उच्चतम अवस्था को प्राप्त करने के लिये मार्ग प्रशस्त करने वाले गीत कहाँ से प्रकट हो रहे हैं? हृदय की तन्त्रियों को झंकारित करने वाले पद्य कहाँ से प्रस्फुटित हो रहे हैं? श्रद्धेय गुरुदेव कोई कवि तो हैं नहीं जो एक के बाद एक कविताओं का सृजन करें। श्री गुरुदेव तो एक महान संत, उच्च कोटि के भक्त एवं योगी हैं। संत कबीर का सूफियाना नज़रिया, मीरा की प्रेम स्वरूपा भक्ति, संत तुलसीदास का सा दैन्य भाव, योग दर्शन एवं शास्त्रों की झलक सभी तो श्री गुरुदेव के भजन एवं गीतों में समाहित है।

जब नारायण कुटी संन्यास आश्रम देवास को इस तृतीय खण्ड के प्रकाशन का कार्य सौंपा गया और मुझसे कहा गया कि इस पुस्तक के बारे में 'दो शब्द लिखूँ' तो मैं संकोच से नतमस्तक हो गया। अखिल ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करने वाले विवस्वान् देव के महत्व को बताने के लिये एक जुगनु को कहा गया। लेखनी और वाणी दोनों कुण्ठित और मूक हो गई हैं।

भक्तों के कल्याणार्थ महाराजश्री श्री शिवोम तीर्थजी के साधना के गहन क्षणों में उनके अन्दस की प्रस्फुटित दिव्य वाणी ही शिवोम् वाणी है। इस दिव्य वाणी के संबंध में कुछ भी कहना एक मूर्खतापूर्ण हठधर्मी होगी। इन भजनों में साधनानुभूति, शक्ति - जागरण, ईश्वर - प्रणिधान तथा साधना के गूढ़ तत्वों का अभूतपूर्व प्राकट्य हुआ है। श्री गुरुदेव महाराज ने सभी साधकों के लिये

हिन्दी के साथ उर्दू एवं पंजाबी भाषा में भजन लिखे हैं जो सर्व साधारण के लिये भी बोधगम्य हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि विद्वज्जन, मुमुक्षु, गायक, संगीतज्ञ एवं साधक बंधु इन भजनों को अपने जीवन में उतारेंगे और अंतः-शक्ति को जागृत कर साधन में और अधिक उत्तरोत्तर प्रगति करेंगे।

इति शुभम्

महाशिवरात्रि

१९९३

गोपालस्वरूप तीर्थ

अध्यक्ष

श्री नारायण कुटी संन्यास आश्रम

(१)

अब पकड़ लिए हैं राम चरण छोड़न का कोई काम नहीं
जग मिथ्या चोला झूठा है, इसमें फंसने का काम नहीं
सारे जग में मैं खोज थका, पर राम नजर आया न मुझे
अब राम से लौ मन में लागी, लौ छोड़न का कोई काम नहीं
कुछ क्षण का मिथ्या जीवन है, कुछ नेक कमाई कर प्राणी
यह जीवन बीता जाता है, खाली जाने का काम नहीं
तू मेरे तेरे में उलझा, माया का रूप न समझे तू
इसमें न उलझा तन मन को, माया का कोई काम नहीं
है अहंकार भूला फिरता, तू अब भी समझ नहीं पाता
झूठा हंकार करे क्यों तू, हंकार का कोई काम नहीं
सतसंगत साधन भजन नहीं, तू चूर हुआ मद में भारी
अपना सुधार कर ले प्यारे, मद मिथ्या का कोई काम नहीं
जीवन बीता सो बीत गया, बाकि जीवन की सूध ले तू
अब नासमझी न कर प्राणी, नासमझी का कोई काम नहीं
हैं विष्णुतीर्थ कृपालु प्रभु, उनके चरणों की शरण गहो
तब पाप कटेगें सब तेरे, अब रोवन का कोई काम नहीं
है तीर्थ शिवोम् पड़ा चरणीं, गुरुदेव कृपा मुझ पर कर दो
जग बंधन में मैं जकड़ा हूँ, जकड़न का कोई काम नहीं



(२)

तू अपना मन नहीं देखे, जग समझाए रह्या है ।
तेरा जीवन बीता जाए, अब घबराय रह्या है ॥
जगत भोग में लिपटा है तू, निज स्वरूप से खिसका है तू ।
तेरा समय निकलता जाए, मन भरमाए रह्या है ॥
अब तो निकल चली है आयु, एक जगह न रहती वायु ।
तू विषय भोग मन लाए, अब पछताए रह्या है ॥
मन मलीन अति चंचल तेरा, जग की विपदाओं ने घेरा ।
आशा तृष्णा रूपी वन में, मन भटकाए रह्या है ॥
विष्णुतीर्थ प्रभु शरण पकड़ तू, ऐसे ही क्यों रह्या अकड़ तू ।
तीर्थ शिवोम् समझ अब प्राणी, अहं दिखलाए रह्या है ॥



(३)

नाम का नाता तूटत नहीं
प्रेम प्रभु का हृदय भरा जब, नेह का भांडा फूटत नहीं
प्रेमी बन कर प्रेम कमाएं, प्रेम से प्रेम बढ़ाता जाए
प्रेम का रंग चढ़ा मन ऊपर, प्रेम रंगा रंग छूटत नहीं
मैं मतवाली प्रभु प्रेम की, हृदय प्रेम में रंग दीना
प्रेम हृदय का, प्रेम से मिलता, लगा प्रेम तब तूटत नहीं
प्रेम न केवल जगत पदारथ, प्रेम प्रभु की शक्ति है
प्रेम जगा जब हिरदय अन्दर, अन्तर का रंग छूटत नहीं
नाम ही जीवन, नाम जगत है, प्रेम ही नाम की किरिया है
नामी का प्रेमी तू बन जा नाम नशा फिर छूटत नहीं
विष्णु तीर्थ प्रभु प्रेम स्वरूपा, नाम प्रेम का दान करो
नाम शक्ति हो अन्तर जाग्रत, प्रेम शक्ति फिर रूठत नहीं
तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुवर की, प्रभु नाम से प्रेम करूं
प्रेम हुआ फिर संशय कैसा, प्रेम नाम का छूटत नहीं



(४)

मोहे राम से नेह लगा रे
गुरु किरिपा से प्रेम बाण उर, सूधो आए धसा रे
वृत्ति पलट गई अब ऐसी, विषयन मोहे न भावे
हृदय प्रेम रस भीग गयो है, मन अनुराग जगा रे
अमृत चख चख, सुख पावत हूं, भेद खेद अब नाहीं
अंग अंग है पी रंग राता, ऐसो रंग चढ़ा रे
राम शक्ति अन्तर भई जाग्रत, दिव्य क्रियाएं होती
लेन देन कुछ शेष नहीं अब, ऐसो प्रेम जगा रे
भजन भाव में मनवा लागत, शोक मोह सब भागे
चढ़ा नशा है उतरत नाहीं, ऐसो मधु चढ़ा रे
विष्णुतीर्थ प्रभु तुमरी कृपा से, दशा भई अन्तर की
तीर्थ शिवोम् गुण गाए हरि के, ऐसो भाव जगा रे



(५)

अब तो वर्षा होवन लागी
बिन बादल, बिन बिजली चमके, अजब क्रिया है जागी।
मनवा तो अब मस्त हुआ है, बना प्रेम अनुरागी
कर्म क्षीण हैं होवन लागे, चित्त हुआ वैरागी
क्रियाशीलता सूक्ष्म हुई अब, हुआ हूँ मैं बड़भागी
होवत परगट शब्द अनेकों, बिन गाए कोई रागी
भोगवासना शीतल होकर, मन से बाहर भागी
श्याम हृदय में नृत्य करत है, राग ताल नहीं रागी
मनवा तो अब रस में भीगा, भोग वासना त्यागी
तृप्त हुई है तृष्णा मन की, बुझी कर्म की आगी
प्रियतम अलख लखा नैनन सों, किरिपा संत वैरागी
प्रेम प्रगटता मन के माहीं, विकसित मैं अनुरागी
विष्णुतीर्थ प्रभु तुमरी कृपा से दिव्य क्रियाएं जागी
तीर्थ शिवोम् आनन्दित है अब, अन्तर दुविधा त्यागी



(६)

प्रभु से प्रेम करो हे भाई
प्राण से परिचय परापत होकर, होत उन्मनी जाई
लीला उस की निरख निरख कर, मन आनन्द मनाओ
अन्तर संशय क्षीण भये सब, प्रेम मगन हो जाई
संत कृपा से पाप कटत हैं, कल्मिश निर्मल होते
जीव होत है राम का प्रेमी, जगत वासना जाई
अन्तर्नाद गुञ्जरित होता, हृदय भीग रस जाता
छूटत जगत पसारा सब ही, अन्तर्मुखता पाई
जगत भासता असत् है मुझको, चेतन अभिमुख मेरे
मन चंचलता त्याग विषय की, अन्तर सोझी पाई
विष्णु तीर्थ प्रभु तुमरी कृपा से, सुख असीम है पाया
दुःख कलेश हैं नष्ट हुए अब, आसकाम हुई जाई
तीर्थ शिवोम् आनन्द मगन है, गुरु किरिपा सुख पाया
मनवा मस्त हुआ है ऐसा, आनन्द आनन्द मनाई



(७)

नाम शक्ति से नष्ट हुए जब, मन के संचित पाप सभी
चित्त शुद्ध विश्राम है पाता, चीहने अपना आप तभी
मन के बन्द कपाट खुल जाते, मोह क्रोध धुल जाते हैं
भोग वासना क्षीण है होती, छूटत माया ताप तभी
काल कराल कष्ट है देता, जीव होत विह्वल भारी
नाम शक्ति जब जाग्रत होती, कट जाते सब पाप तभी
पुरुषार्थ के मद में भूला, जीव भटकता रहता है
नाम शक्ति की होत कृपा जब, अजपा होता जाप तभी
मोह जाल में जीव बंधा है, कर्म लेख दुःख देत उसे
नाम शक्ति जब परगट होती, देती बंधन काट तभी
विष्णु तीर्थ प्रभु तुमरी कृपा से, मन उन्मुक्त हुआ ऐसा
रोग शोक दुख देत नहीं अब, जाना अपना आप तभी
तीर्थ शिवोम् विनती कर जोड़े, नाम दान की कृपा करो
मन का मैल उतर सब जावे, होऊं में निष्पाप तभी



(८)

गुरु का नाम अनोखी दात
नाम मिले जब गुरु किरपा से,, अनुभव अन्तर पात
नाम ज्ञान अति गहर गम्भीरा, सतगुरु से ही मिलता
नाम शक्ति अन्तर्मुख होती,, ज्ञान प्रकट हो जात
नाम नहीं है शब्दाडम्बर, नाम सकल विस्तारा
नाम शक्ति जब क्रियावती हो, भेद नाम का पात
नाम शक्ति के रूप अनेकों, जल थल सभी वही है
भेद नाम से ही है खुलता, भ्रम हृदय का जात
मुक्त जीव नाम से होता, नाम ही पार लगाए
नाम बिना जग में नहीं कोई, दूर सभी उत्पात
विष्णुतीर्थ प्रभु कृपा तुम्हारी, नाम हुआ परकाशित
भोग वासना जलती जाए, तृष्णा ममता जात
तीर्थ शिवोम् दया गुरुवर की, चरणीं तुमरी लागा
तुमरी कृपा बिना है मन से, भ्रम माया नहीं जात



(९)

सतगुरु बंधन देत छुड़ाए
नाम करे अन्तर में चेतन, तृष्णा देत हटाए
नाम रतन किरिपा कर दीना, हिरदय भाव जगाये
नाम रूप का मोह छुड़ा कर मन का मैल हटाए
न गरजे न बरसे बादल, बिजली का चमकारा
फिर भी मन में गरज तरज कर, वर्षा वह बरसाए
बिन किरिया के क्रियाशील हो, पाप नाश वह करता
लीला उसकी है यह न्यारी, घटना अघट घटाए
मन को शंकाओं ने घेरा, मति मलीन है मेरी
दुविधाओं से मुझे निकाला, संशय सब छिटकाए
विष्णुतीर्थ प्रभु मुझे उबारो, पतित पड़ा चरणों में
पाप क्षीण मन निर्मल करके, मन विकार हट जाए
तीर्थ शिवोम् विनती कर जोड़े, करो अनुग्रह मो पर
विषय भावना क्षीण सभी कर, कल्मश दियो मिटाए



(१०)

काम क्रोध दो भाई ऐसे, जिनसे दुखी जगत सारा
उन की गति किसे न पाई, पच पच हारा जग सारा
क्रोध हुआ उत्पन्न चित्त में, समझत आपन वीर घना
मेरे आगे जगत तुच्छ है, विजय करूं मैं जग सारा
लड़ता, झगड़त, क्रोध है करता, बात सुनाए खरी खरी
अगन रूप परचण्ड धारता, रहा जलाए जग सारा
काम अंकुरित होता मन में, जग को त्रास बहुत देता
कौन, कहाँ न देखत है वह, खूब नचाए जग सारा
सुप्त पड़ा रहता वह मन में, समय देख उठ धाता है
वश में कर मानव को अपने, खेल खिलाए जग सारा
विष्णुतीर्थ प्रभु कृपा करो, मैं आया शरण तिहारी
नहीं तो क्रोध काम अपराजित, खूब घुमाया जग सारा
तीर्थ शिवोम् विनती कर जोड़े, दीन जनों पर करो दया
काम, क्रोध का मारा अब तो, शरण पड़ा है जग सारा



(११)

प्रभु स्वरूप देखो चित्त लाए, अलख यूं ही न लखया जाए
दृष्टि न आवे, गम्य नहीं वह, नहीं हाथ छुआ वह जाए
अवघट घाट बना वह ऐसा, घाट गया फिर लौट न पाए
परापत करना बहुत कठिन है, जिस पाया वह बोल न पाए
कौन, कहाँ से उसको देखे, यह भी कोई समझत नहीं
पंछी उड़े आकाश में जैसे, मारग कोई खोज न पाए
कौन कहाँ से जीव है आता, कौन कहाँ फिर वह है जाता
भटकत मानव पड़ा भरम में, गुत्थी वह सुलझा न पाए
कौन कहाँ से खाने वाला, कौन कहाँ से लाने वाला
जीव बेचारा समझ न पाए, वह समझाए सौझी पाए

दोहा :- विष्णु तीर्थ प्रभु शरण में आया ठोकर खाए
तीर्थ शिवोम् विनय करें, मारग देयो दिखाए



(१२)

यह मन के रंग हैं रंगारंग
जाकी वृत्ति सत्य प्रतिष्ठित, करत है सोई भंग
यह मन बना अति ही चंचल, करता चोरी चोरा
अवसर देखत धावत जग को, करत विषय का संग
मानत नाहीं ज्ञान ध्यान को, अपने मन की करता
काम लोभ में मस्त बना वह, यह हैं इसके ढंग
कभी देवता, कभी हो राक्षस, बदले रूप अनेकों
ज्यों देखें, त्यों ही बन जावे, ऐसे इसके ढंग
कभी शिष्य बनता श्रद्धालु, बदले रूप कठोरा
इसका जो विश्वास करत है, होवे सो बदरंग
कितना भी समझाए थको तुम, सीख यह मानत नाहीं
विषय भोग में रमता रहता, रहता अपने रंग
विष्णुतीर्थ प्रभु कृपा करो अब, आर्त हुआ मैं मन से
या से मुक्त करो है प्रभु जी, छूटे इसका संग
तीर्थ शिवोम् शरण में आया, तज अभिमान हूँ अपना
अब तो दया करो है हरिहर, पाऊँ प्रभु का संग



(१३)

मन करामाती तुम ऐसे
कहीं विश्वम्बर, कहीं जगदीश्वर, क्या क्या हुई गए कैसे
बिन तुम जाने है दुख भारी, जाने होत सुखारी
कहीं रूप न दीखत तुमरा, गुप्त बने हो कैसे
भेद तुम्हारा जानत है जो, मिलन प्रभु का पाता
जो अंजाना बना वियोगी, गति जाने सो कैसे
वेद पुराण सुनावत तुम ही, तुम्हीं बने अनजाने
करत सभी कुछ करता नहीं, समझे कोई कैसे
योगी भी, भोगी भी बनते, जग को नाच नचाते
करते खेल अनेकों तुम हो, बचता कोई कैसे
विष्णुतीर्थ प्रभु तुमरी कृपा से, मन का भेद पछाने
नहीं तो मारग बहुत कठिन है, जाने कोई कैसे
तीर्थ शिवोम् शरण में आया, मुझको प्रभु बचा लो
जीव बेचारा तड़पत हारा, मुक्ति पाए कैसे,



(१४)

सोहागन ऐसी बन जावे
जा के मन में एकै तृष्णा,, कब पी प्यारा पावे
तन मन सौंपे प्रभु प्रियतम को,, अन्य नहीं अभिलाषा
जब लगि हौं दर्शन नहीं पाऊं,, जीय नहीं सुख पावे
धर्म न जाने कर्म न जाने,, मन में प्रेम समाया
प्रेम दिवानी सूझत नाहीं,, क्योंकर प्रियतम पावे
पूरणकाम रहे जग माहीं, प्रभु से नेह लगाया
ऊठत बैठत पियहिं घ्यावें,, पी का नाम कमावे
पतिव्रता होकर नित रहती, दूजे ध्यान न जावे
क्षण-क्षण करती सिमरन प्रभु का, हिरदय राम बसावें
तीर्थ शिवोम् बलिहारी जाऊं, ऐसी पतिव्रता पर
जा के एक सहारा प्रियतम, अन्य नहीं मन जावे



(१५)

सोहागन पी के रंग राती
कुल समाज को जानत नाहीं, भोग नहीं भाती
सोई सुहागन पी पावत है, विषय वासना नाहीं
आठों पहर पिया को ध्यावत,, प्रेम रंगी जाती
पिय की सेज मिले ताही को,, जा के मन हौं नाहीं
आपा छांड, पियहिं हुई जावे, सुखी हुई जाती
मौज प्रभु की,,जा की इच्छा, काम नहीं मन माहीं
प्रेम जगत में एक समाना, सब के मन भाती
ताहि समझो प्रेम सोहागन, जा सब पूरण काम
संशय मन में एको नाहीं, प्रेम मगन जाती
एक चित्त हो प्रभु ध्यान में, रहती लीन निरन्तर
चंचलता सब त्याग जगत की, प्रेमी बन जाती
तीर्थ शिवोम् ध्यान धर ताका, हुआ धन्य मैं आज
सोई सोहागन पति प्राप्त कर, ता में मिल जाती



(१६)

प्रेम का मारग कठिन है भाई,
वीर पुरुष जो चढे चढाई, जानो विरला जाई
ज्यों खाण्डे की धार पह चलना, पाव घायल होवत
तैसे प्रेम गली में फिसलन, गिरत खाई में जाई
प्रेम गली है अति सांकड़ी, ता में दो न समाय
जगत छोड़, हो जाए अकेला, प्रेम गली जाई
जब तक तू और तेरा प्रियतम, द्वैत बना है मन में
प्रेम गली में जाना नाहीं, सकत नहीं तू जाई
छोड़ द्वैत तू एक हो पी से, अपना आप मिटा दे
पी का पंथ पी जावन हारा, निकल गली से जाई
सद्गुरु कृपा सूझ भई मन में, प्रेम का पंथ दिखाया
प्रेमी होकर, प्रेम गली से, निकसत ही तू जाई
तीर्थ शिवोम् दया गुरुवर की, प्रेम की अगन जला दो
प्रेम मगन हो, प्रेमी बन कर, घर प्रियतम के जाई



(१७)

प्रभु मोहे दास बना लो अपना
जगत विषय का संग त्यागकर, नाम रात दिन जपना
यह जग हरण विवेक करत है, काम न बुद्धि देती
सार हीन मिथ्या संसारा, काहे इसमें खपना
भोग जगत के मन को भाते, अपनी ओर बुलाते
विषय-वासना मन में भारी, देखत इनका सपना
बस न चलत कुछ मेरा अब तो, विवश हुआ मैं हारा
मुझे बचा लो, मन न चाहे, विषय भोग से हटना
सतसंगत भी मैंने कीनी, पर मन यह भी डरता
जगत खींच न लेवे मुझको, बल नाहीं है अपना
गुरुकृपा से तुम रीझत हो, दीनों का दुख हरते
मुझ पर भी उपकार करो प्रभु, जग से चाहूँ हटना
तीर्थ शिवोम् कृपा अब मो पर, सिर तेरे चरणों में
सम्भालो, मुझे बचा लो, दास बना लो अपना



(१८)

मैं तो प्रभु की शरण पड़ी
जनम जनम की दुखिया नारी, द्वारे आन खड़ी
खोजत, ताकत, थाकत हारी, ओर छोर नहीं पायो
अब तो विवश भई मैं ऐसी, तुमरी ओर मुड़ी
मन में संशय अति ही भारी, दीखत मारग नाहीं
जाऊं कहाँ पग परत कहीं है, राह में रही अड़ी
मन मलीन कर्मों की गठड़ी, सिर पर रही धरी
सुध लो प्रभु बेभान हो रही, रोवत घड़ी घड़ी
विषय भोग आकर्षित करते, छूट न इनसे पाती
कृपा करो हे हरिहर अब तो चरणीं आन पड़ी
तीर्थ शिवोम् दया गुरुवर की, मन चरणों में मोड़ा
मो को जग अब भावत नाहीं, सिमरन माहीं जुड़ी



(१९)

पिय से क्योंकर मिलना होय
कब की बिछुड़ी प्रियतम से हूँ, कैसे दर्शन होय
सूनी सेज पिया बिन मोरी, सिसक सिसक रह जाऊं
अजहूं न आया राम पियारा, कैसे मन समझाय
खोलूं किस के सन्मुख हिरदय कोई समझ न पाता
जग भोगों में लीन बना है, किस के आगे रोय
मन में मेरे अगन लगी है, बुझा न कोई पाता
पियजल छिड़के आकर तब ही शीतल हिरदय होय
सद्गुरु पूरा कृपा करें जब, मारग प्रभु का पाऊं
प्रियतम मेरी सेज विराजे, सुख अन्तर में होय
तीर्थ शिवोम् गुरुचरणीं लागी, राह प्रभु की पाऊं
तपन हृदय की त्याग सुखी मन, दूर सकल दुख होय



(२०)

प्रभुजी कैसे विकट निर्मोही
मैं खोजत तुम दीखत नहीं, कैसे पाऊं तोही
जगत पुकारत, मानत नहीं,, अपनी मौज में रहते
मुझ पर कृपा करो मैं हारी, दर्शन दीजो मोही
मेरे मन के अवगुण देखत, हृदय-भाव नहीं देखो
मैं तो प्रियतम के रंग राती, क्यों तरसाओ मोही
तुमरे दर की बनी भिखारन, भोग जगत नहीं भाते
कब तक राह निहारूं तुमरी, धीरज रहा न मोही
भई दीवानी, राम रसायन, औषध और न लागे
नाम दान की कृपा करो प्रभु, लागत मो को वोही
सद्गुरु देव तुम्हारी किरिया, शरण तुम्हारे आई
तीर्थ शिवोम् मगन भई ऐसी, सन्मुख देखूं तोही



(२१)

हैं तो पियहि रंग राती
जगत विषय मन धावत नाहीं, नाम ही मदमाति
सतसंगत और राम भजन में, मनवा सुख माने
ध्यान भजन सेवा ही मेरे, अब तो मन भाती
भोग वासना क्षीण हुई सब, मन जग में है नाहीं
राम की पूजा, राम का सिमरन करती दिन राती
सद्गुरु किरिपा वर्षा मो पर, भीगा तन मन सारा
प्रेम मगन में भई दीवानी, फिरती मदमाती
तीर्थ शिवोम् आनन्दित हूँ मैं, शोक मोह सब छूटे
प्रभु चरणों में मस्त भई मैं, शीतलता छाती



(२२)

गुरु बिन जग में सार नहीं
सद्गुरु प्रेम समाया मन में, पारावार नहीं
जगत पसारा नाम रूप है, गुरुशक्ति ही व्यापे
ते सद्गुरु मेरे प्राण आधार, दूजा सार नहीं
हौं मतवाली गुरु प्रेम की, भव सागर सब छूटा
करे न जग बंधन से दूजा, कोई पार नहीं
विष्णुतीर्थ प्रभु शरण पड़ी हूँ, नैया पार लगाओ
तीर्थ शिवोम् गुरु से आगे, कोई सार नहीं



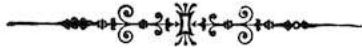
(२३)

जब परकाश उदय होता है, अंधकार मिट जाता है
सूर्य गगन में नाहीं होता, तारा रूप दिखाता है
अन्तर जब आनंद प्रकाशित, मन मस्ती में आता है
विषय वासना फीकी लगती, जगत भाव मिट जाता है
गुरु कृपा से जागृत शक्ति, अन्तर्मुखी प्रवाहित हो
कर्म वासना क्षीण है करती, मन निर्मलता पाता है
मन आनन्द प्रेम से भरता, ज्ञान उदय होता अन्दर
ज्ञानलोक हृदय में होता, तम विलीन हो जाता है
विष्णुतीर्थ प्रभु तुमरी कृपा से, मन आनंद विभोर हुआ
तीर्थ शिवोम् दया भई ऐसी, हृदय प्रेम भर जाता



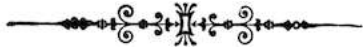
(२४)

मैं गोविन्द गुण गाती
भर प्याला गुरुदेव पिलाया, पी के रंग राती
प्रेम भरा अतुलित मन माहीं, भय जग में का नाहीं
विषय भोग की तृषा बुझी सब, भई मैं मदमाती
होत प्रेम सर्वत्र जगत में, वैर किसी से नाहीं
सकल जीव पी का परिवारा, सब के मन भाती
अन्तर में आनन्द विराजे, किरिया शक्ति जागी
नाद प्रकाश घटित भीतर में, मस्त हुई जाती
गुरु कृपा की लीला न्यारी, मन निर्मलता पाता
थिरता प्रापत बुद्धि विकसित, मन ही मन राती
कभी ध्यान मुद्रा परकाशित, तन किरियाएं होती
कभी ज्ञान परगट अन्तर में, लीन हुई जाती
विष्णुतीर्थ प्रभु अपरम्पारा, अपरम्पार ही लीला
तीर्थ शिवोम् यह किरिया कीनी, तुमरा यश गाती



(२५)

माधव माया ठगनी से, यह जग हार गयो
तुमरी कृपा बिना प्रभु मोहे, न कोई पार पयो
जती सती और योगी ज्ञानी, कोई ठहर न पाया
माया ठगनी नाच नचाया, कूपे अंध पयो
अहंकार में भूले मानव, दुखी सुखी सारे ही
कोई सम्भल नहीं है पाया, सब मंझधार पयो
या से छूटन जतन करत जो, और अधिक उलझाती
माया कोई उबर न पाया, गहरे अंध पयो
यह माया है गहरा सागर, डूबे जीव सभन ही
बिन किरिपा रघुवीर गुसाई, मारग भटक गयो
विष्णुतीर्थ प्रभु अति ही कृपालु, राम मिलाए देते
काटत मन के बंधन सारे, मैं हूँ शरण पयो
तीर्थ शिवोम् विनय प्रभु आगे, करो दया अब मो पर
त्याग जगत के सभी सहारे, तुमरी शरण पयो



(२६)

राम भज राम भज राम भज बावरे
राम ही से नाता तेरा, राम ही से भाव रे
जगत में भूला बैठा, राम को बिसार कर
राम तेरे काम आते, राम ही से चाव रे
राम ही से संग तेरा, राम मन भाता तेरा
राम रंग राता तेरा, राम मन लाव रे
दिन रात राम जपो, जगत में काहे खपो
चरणों में चित्त राख, राम नाम गाव रे
जगत अनोखा देखा, सब में ही धोका देखा
सत्य एक राम नाम, पार करे नाव रे
गुरुदेव कृपा करे, तभी रंग राम चढ़े
तभी नेह राम लगे, तभी मन भाव रे
तीर्थ शिवोम् जपो, नित्य नाम राम हरि
काम तेरे सकल सिद्ध, राम राम गाव रे



(२७)

मेरो मन गुरु चरनन में लागा
जब ते सद्गुरु दर्शन पाया, हर पल बना बैरागा ॥
राग न मोह न शोक न व्यापे, मन चंचलता नाहीं
हर दम वृत्ति अन्तर्मुख ही, अन्तर आनन्द जागा ॥
चेतनता है मन में परगट, क्रिया अनेकों करती
सद्गुरु सन्मुख बने रहत हैं, काम क्रोध सब भागा ॥
गुरु अन्दर हैं, बाहर वोही, गुरु जगत में व्यापे
गुरु बिना जग में नाहीं कुछ, ऐसा भाव है जागा ॥
हरि गुरु जग में परकाशित, उसकी लीला सारी
जड़ को करता चेतनवत् वह, ध्यान है ऐसा लागा ॥
विष्णुतीर्थ प्रभु सद्गुरु पूरा, चेतन शक्ति स्वामी
तीर्थ शिवोम् है किरिपा पाई, मन श्री चरणीं लागा ॥



(२८)

जीवन बीत गया है मेरा, बीता जीवन पल में ही
भजन भाव कीनो नहीं कुछ भी, बीता.....
विषय वासनाओं में उलझा, कर्म शुभ कुछ भी नहीं
समय गंवाया यूँ ही मैंने, बीता...
गुरु सेवा न हो पाई कुछ, गुरु साधन भी न कीनों
गुरु शिष्य का दम्भ ही भरता, बीता...
मृत्यु द्वारे आन खड़ी है, पलभर की अब देर नहीं
जन्म मरण का चक्र घूमता, बीता...
विष्णुतीर्थ बिन किरिपा तेरी, मानत मन नहीं मेरी
कृपा करो हे गुरुवर अब तो, बीता...
मैं आया तेरे चरणों में, शुद्ध करो मन को मेरे
मन मेरा निर्मल अब कर दो, बीता...
तीर्थ शिवोम् विनती कर जोड़े, कृपा करो मुझ पर स्वामी
समय बीतता ऐसे जैसा, बीता....



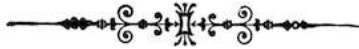
(२९)

प्रभु जी लीजो मोहि उबार
जनम जनम की दुखिया नारी आई तेरे द्वार
देश अनेकों देखे मैंने लाखों जीव हैं देखे मैंने
पर मन शान्त नहीं हो पाया आई तेरे द्वार
मन है अभिलाषा में डूबा आशा चिन्ताओं में डूबा
अन्तर मैल उतर न पाया आई तेरे द्वार
भाँति-भाँति के स्वांग बनाए जप तप संयम किये कराये
मन का मीत नहीं मैं पाया आई तेरे द्वार
अब कुछ सूझ पड़े न मुझको मन में चैन न आवे मुझको
अब तक राम नाम न पाया आई तेरे द्वार
विष्णुतीर्थ प्रभु तुमरी कृपा से जीवन सफल बन जाय
मैंने अब तक दर्स न पाया आई तेरे द्वार
तीर्थ शिवोम् भटकती आई मैं न टिकी भटकती आई
न कोई अपना मिला पराया आई तेरे द्वार



(३०)

कामी, क्रोधी लोभी होकर, भजन नहीं हो पाता है
जीव भोग में डूबा रहता, राम नहीं मन भाता है
जब तक मन निर्मल न होवे, भजन भाव होवे कैसे
जब तक जीव पड़ा विषयों में, सुखी दुखी हो जाता है
अब तो समझ बूझ ले प्राणी, जग में सुख मिलता नहीं
जगत् भोग में पड़ा जीव तो, दुख ही दुख को पाता है गुरुशरण
कारण है सुख का, प्राप्त जीव उसको करले
प्रभु कृपा से ही मानव को, गुरु दर्शन हो पाता है
विष्णुतीर्थ प्रभु तुमरी कृपा से, मन अपने को शुद्ध करूं
तीर्थ शिवोम् हुआ मन ऐसा, गुरु चरणों को ध्याता है।



(३१)

पिय देखे बिन मन तड़पत है
काय करूं कुछ सूझत नाहीं, हृदय मोर फड़कत है
किससे पूछूं बात करूं क्या, मैं कुछ जान न पाती
भई बावली बन बन भटकूं, कल न मोहे पड़त है
खोजत खोजत भई दीवानी, मन में थिरता नाहीं
कौन समय जब पिया मिलेंगें, नैनन राह तकत है
कौन मिलावे प्रियतम मेरा, है कोई दर्स दिखावे
भूली फिरती नगर नगर में, मन में सूल खटक है
पूरण सद्गुरु किरिया कीजै, तभी राह पिय पाऊं
नहीं तो भटक भटक मर जाऊं, मारग नाहीं लभत हैं
तीर्थ शिवोम् विनय कर जोड़े, मुझ को राह दिखाओ
सद्गुरु देव कृपा बिन मनवा, पा न डगर सकत है



(३२)

मनवा मुक्त जो होना चाहे विषय त्याग
विष के समान तू दया सरलता पावे
क्षमाशील हो सत्यनिष्ठ तू अहंकार नहीं मन में
कर संतोष लाभ हानि में दिव्यानन्द तू पावे
जल पृथ्वी अग्नि तू नाहीं न आकाश न वायु
साक्षीवत् चेतन स्वरूप तू तो आत्म पद पावे
देह जान न्यारी अपने से चेतन में स्थित होवे
तभी सुखी और बंध मुक्त तू चैतन्यानन्द पावे
वर्ण विहीन स्वरूप है तेरा आश्रम भी नहीं कोई
सकल इन्द्रियों से तू न्यारा जान सुखी हो जावे
धर्म अधर्म और सुख सारे मन ही सब उपजावे
न तू करता भोगता न तू जान मुक्त हो जावे
तू है द्रष्टा सब सृष्टि का सदा मुक्त तू रहता
द्रष्टा माने तू दूजे को तो बंधन में आवे
में रुपी तू सर्प से दंशित पर कर्ता तू नाहीं
ऐसा अमृत पीकर प्राणी सदा सुखी तू होवे
बोध स्वरूप रूप है मेरा अग्नि यही अलौकिक
कर अज्ञान भसम तू इसमें निजानन्द को पावे
रज्जु सर्प समान भासता दृश्य जगत यह सारा
परमानन्द का बोध यही है जीव सुखी हो जावे
मुक्त भाव मुक्ति में रमता बंधन में बद्ध होता
जैसी मति गति हो वैसी वैसा ही हो जावे
मिलता ज्ञान गुरु से है यह और ठिकाना नाहीं
कृपा करें गुरुदेव तभी तो बद्ध मुक्त हो जावे
तीर्थ शिवोम् विनती कर जोड़े हरो अविद्या मोरी
संशय टूट बुद्धि हो निर्मल आत्म लाभ कमावे

(३३)

जगत में राम बिना कछु नाहीं
राम बना है सकल पसारा, परगट घट घट माहीं
राम ही देखत, राम सुनत है, राम ही क्रिया करत है राम
बना है तत्व अनेकों, व्यापक हर घट माहीं
सुन्दर दृश्य राम के दीखत, लीला करत अपारा
भाँति-भाँति के रूप बनावत, रहता हर घट माहीं
शोषक बन शोषण वह करता, शोषित होकर रहता
खेल करत है जगत मंच पर, अभिनय हर घट माहीं
शान्त चित्त हो ध्यान लगावे, योग करे बहु भाँति
चंचल मन हो भटके फिरता, करत क्रिया घट माहीं
अनुभव रूप राम न आवत, गुरु कृपा से दीखत
तीर्थ शिवोम् कृपा सों ही यह, लिव लागे घट माहीं



(३४)

जल बिन मटका पूर रहा
राम नाम की ऐसी महिमा, बरसत नूर रहा
राम जगत में दीखत नाहीं,, सभी जगह वह व्यापक
राम बिना कुछ होवत नाहीं,, घट घट पूर रहा
राम है अन्दर राम ही बाहर, राम बिना कुछ नाहीं
जीव बना अनजान है ऐसा,, जग को घूर रहा
मंदिर औ तीरथ में भटका,, खोज फिरा जग सारा
हिरदय अपना देखत नाहीं, समझत दूर रहा
इसको पूछा, उसको देखा, ठौर नहीं कुछ पाया
गुरु अंजन नैनन बिन आंजे, यूं ही झूर रहा
अब तो कृपा करो गुरुदेवा, टेर सुनो प्रभु मोरी
आत्म तत्व दिखाओ मुझको,, कण कण पूर रहा
विष्णुतीर्थ प्रभु कृपा बिना न, मन विश्राम है पाता
तीर्थ शिवोम् शरण गुरुवर की,, संशय दूर रहा



(३५)

प्यारे भजले प्रभु का नाम, त्याग क्रोध और काम
जनम अकारथ विषयन कीना, तो को समझ न आई
मद में तू बौराना ऐसा, छोड़ दिया हरि नाम
जो करना था सो न कीनो, व्यर्थ के नाम कमाए
जीवन यों ही बीत गयो है, लगा रहा बेकाम
जो बीती सो बीत गई है, बाकि की सुध ले तू
यही बात है तेरे हित में, लगे भजन के काम
सत संगत औ हरि भजन में, जो है समय लगाता
प्रभु प्रेम परापत है करता, होता आपत काम
विषय भोग मन भरता नाहीं, और और मन करता
हरि भजन से जग छुटकारा, छूटे जग के काम
तीर्थ शिवोम् नाम जप मनवा, आशा तृष्णा छूटे
मुक्त बने तू आशाओं से बच जाएगा चाम



(३६)

मेरो मन बस में रहत नहीं
मैं कहता हूँ हरि भजन को, जावत भटक कहीं
घूमत फिरत चार दिशा वह, थिरता उसमें नाहीं
विषयों में चंचलता उसकी, भटकत कहीं कहीं
मैं थक हारा समझा उसको, पर वह समझ न पाता
मानत नाहीं सीख किसी की, रहता यहीं कहीं
कैसे पकड़ूं, कैसे साधूं, दीखत नहीं उपाए
युक्ति कौन करूं में जिससे, पकड़त उसे कहीं
विष्णुतीर्थ प्रभु बिन किरपा, मन बस में नहीं आता
करूं सवारी मनवा ऊपर, जावत कहीं कहीं
तीर्थ शिवोम् भजन का मारग, कठिन बहुत है भाई
मनवा साथ न देवे तब तो, होवत भजन नहीं



(३७)

राम सो ऐसो नेह लगा रे
पांव बिना हों नृत्य अनेकों जीभ बिना गुण गा रे
अन्तर दीखे बिन नयनन के मुंह खोले बिन बोले
कान बिना हो सुनता सब कुछ बिन बादल बरसा रे
बिन पानी के कल कल होवे बिन बिजली चमकारा
बिन काजल के नयनन अंजन बिन हाथों पकड़ा रे
बिन रंग के त रंग ले मन को प्रेम का रंग निराला
तू बिन सतसंगत संगत करले जल बिन प्यास बुझा रे
गुरु किरपा हो नेह जगे तब गुरु सेवा तू कर ले
तीर्थ शिवोम् राम रंग राता मन अपना समझा रे



(३८)

श्री गुरु तृष्णा अगन बुझाई
मन निर्मलता सद्गुरु दीनी, हरि चरनन लिव लाई
गुरु ही नाम अलौकिक दीना, चेतन शक्ति जाग्रत
स्वयं सिद्ध किरियाएं होती, मन भक्ति प्रकटाई
अगन वासना में संसारा, धधके ज्यों वन अग्नि
गुरु नाम ही रक्षक होता, अगन दे निपटाई
गुरु प्रकटावे अन्तर ज्ञाना, गुरु मारग दिखलाए
गुरु से ही निज घर प्राप्त हो, बंधन देत छुड़ाई
गुरु देता भक्ति भंडारा, मन आनन्दित होता
सारा जग मिथ्या परकाशित, दे आवरन हटाई
गुरु देत है शब्द अपारा, चित्त लीन हो जाता
आशा ममता त्याग जगत की, गति अमोलक पाई
गुरु देत है सुख अनन्ता, मन विश्राम है पाता
भक्तिलीन मन उपजे अन्तर, अन्तर का सुख पाई
विष्णुतीर्थ प्रभु तुमरी किरिपा, सभी दिशा परकाशित
अंधकार सब दूर हुआ है, तम है दिया हटाई
तीर्थ शिवोम् गुण गाए गुरु के, फल किरिपा का पाया
मन चंचलता दूर हुई सब, तृष्णा अगन बुझाई



(३९)

मन तू हरि चरनन लिव लाए
निज घर वास करे तू अपने, यम से दूर रहाए
जीवन मृत्यु जगत पसारा, तुझको बांध न पाते
जो लिव लाए रामनाम सों, क्यों मृत्यु घर जाए
नाम निधान तेरे मन माहीं, बाहर वस्तु नाहीं
जग में खोजे भरम भुलाना, अन्तर वस्तु पाए
गुरु मौज में मन का अर्पण कर, यही मारग है तेरा
बन बन खोजे है तू सुख को, कैसे उसको पाए
मनमुख दृष्टि कर परिवर्तित, जग में है सुख नाहीं
अन्तर्मुखता में ही व्यापे, नाम रतन फल पाए
आतम ज्ञान विहीन जगत में, दुख ही गले लगाते
माया मोह में अंधा प्राणी, माया में भरमाए
मृत्यु बंधा सब संसारा, काल से पर को नाहीं
राम नाम ही ऐसी औषध, मृत्यु दूर भगाए
विष्णुतीर्थ प्रभु शरण में आया, करो अनुग्रह मो पर
जग की आशा त्याग सभी सुख, मन अन्तर्मुख जाए
तीर्थ शिवोम् कृपा भई मो पर, पूरण सद्गुरु पाया
मल निर्मल से दूर हटे मन, अन्तर में लिव लाए



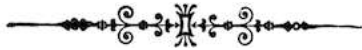
(४०)

मंगल भवन सुनो प्रभु मोरी, द्वारे तुमरे आन पड़ी
जनम जनम की दुखिया नारी, आशा लेकर आन खड़ी
खोजत खोजत मैं थक हारी, ठौर नहीं कोई पाया
अब तो कृपा करो है स्वामी, याचक सन्मुख आन खड़ी
जग में कोई अपना नाहीं, स्वारथ के संगी साथी
वृत्ति पलटे प्रभु चरणों में, इस आसा से आन खड़ी
जगत भोग भी दुःखदायी हैं, मन को चंचल कर देते
पिण्ड छुड़ाओ इन विषयों से, आर्त भाव से आन खड़ी
तीर्थ शिवोम् विनय प्रभु आगे, अब तो अर्ज सुनो मोरी
करना नहीं निराश हरिहर, दुखिया द्वारे आन पड़ी



(४१)

प्रियतम से मिलि एक भई मैं
अपना अलग नहीं कछु बाकी, पी की सेज पई मैं
पी ही पीव दीखे अब मुझको, पी ही मन भरमाए
पी के संग भई मतवारी, पी मिल पीव भई मैं
सारा जगत पीव के अन्दर, पीव बिना कछु नाहीं
पीव बना है जगत पसारा, पी का रूप भई मैं
प्रकट गुप्त सब पीव बना है, पी ही सर्व समाना
पीव ब्रह्म और पीव ही माया, पी संग एक भई मैं
तीर्थ शिवोम् मस्त भई ऐसी, पी में मेल मिला अब
पीव पीव बस पीव पीव है, पी अनुरूप भई मैं



(४२)

कब मिलसि मेरा प्रियतम आए ।
राह निहारत थाके नयना, पीव अबहु नहीं आए॥
पलक न झपकूं, नयन न मूँदू, पीव न निकसि जाय ।
अपलक राह निहारूं प्रभुजी, अजहुँ राम नहीं आये ॥
मेरा प्रियतम छैल छबीला, नित नवीन नवयौना ।
गुरु बिन मेल मिलाए कबना, प्रियतम कहाँ समाए॥
गुरु मारग दिखलाए पी का, संग जीव के जाए।
सद्गुरु किरपा अनूप अनन्ता, पी परगट हो जाये ॥
तीर्थ शिवोम् सदगुरु किरपा से, विरह अगन बुझाए ॥



(४३)

कोई मो को गुरु मारग बतलावे राम नाम चित्त भावै ॥
राम नाम कहता जग सारा, कोई राम न जाने,
राम प्रकट कर हिरदय माहीं, दीपक हाथ धरावे ॥
पग पग ढूँढत राम जगत में, अन्तर खोजत नाहीं
अन्दर ही कर राम प्रकाशित, संशय सकल मिटावे ॥
तीर्थ शिवोम् है माया झूठी, झूठा सर्व पसारा,
दर्शन राम किये बिन अन्दर, तृष्णा नहीं नसावे ॥



(४४)

हौं तो माया में लिपटाना
डूबत जात रहा भव सागर, जात नहीं उबराना
भ्रमत फिरत विषयन के पाच्छे, बना मूढ अज्ञानी
भरत पेट और धावत भोगन, अब तक नहीं अघाना
माया से हारा जग सारा छूट न पावत कोई
जग प्रपंच में डूब रहे हैं, बड़े बड़े बलवाना
न सत संगत, राम भजन न, कर्म धर्म भी नाहीं
हौं मदमाता रहत फिरत हूँ, धूर्त बना अनजाना
रैन दिवस है बीतत जावत, बीत चली सारी ही
अजहूं समझ न आई मूर्ख, अब तक नहीं अघाना
तीर्थ शिवोम् कृपाकर गुरुवर, मारग सूझत नाहीं
दुख सुख में जीवन बीता सब, फिरत रहा गरवाना



(४५)

प्रभु तूने रावण का वध कीनों, प्रभु तूने रावण का वध कीनों।
मेरे अन्दर रावण बैठा, ताका कछु नहीं कीनों ॥
इन्द्रिय जीत अंहकार है भारी, कुंभकरण है
निद्रा ता में उलझा है मन मेरा
मनवा मेरा छोड़ अयोध्या लंका हुई
है न्यारी, मेरी सुध नहीं लीनों ॥
ता मे राम राज्य कर थापित, मन अपना कर लीनो,
वानर रूप राम की सेना, दबी पड़ी है मन में,
जाग्रत होकर उत्साहित उसको हृदय शुद्ध कर दीनों.
जीव पड़ा है श्री चरणों में, मुझे सम्भालो प्रभुजी
शरण में आया आशा लेकर, मन मेरा हर लीनो,
रावण बना है सर्व व्यापक, कोई छूट न पाता,
अन्तर का रावण वध कर दो, तृष्णा निर्मल कीनो,
तीर्थ शिवोम् विनय चरणों में, विपदा मेरी हर लो,
अन्तर रावण मार भगाओ पार प्रभु मोहे कीनो



(४६)

जय जय जय जय सद्गुरु देवा ।
तम नाशक, प्रकाश के दाता, सुख अखण्ड प्रदेवा ॥
तुमरी कृपा दृष्टि से प्रभुजी, दीपक से दीपक जलता ।
अन्तर्ज्योति होत प्रकाशित, ब्रह्म स्वरूपा सद्गुरु देवा ॥
गुरुशक्ति की क्रियाशीलता, मन मलीन निर्मलता पाता।
संचित कर्म क्षीण हो जाते, कृपावन्त हे सद्गुरु देवा ॥
जो भी आता याचक बनकर, खाली हाथ नहीं वह जाता ।
कृपाशील होते तुम उस पर, दया अलौकिक सद्गुरु देवा ॥
जिसकी निष्ठा तुम पर दृढ़ हो, मन का मौन प्रात वह करता ।
होता जग से अनासक्त वह, निर्भय होता सद्गुरु देवा ॥
गुरु शक्ति हो ज्ञान प्रदाता, संशय मन का वह हर लेती है ।
मन प्रकाश से युक्त हुआ तब, करता सेवा सद्गुरु देवा ॥
तीर्थ शिवोम् शरण में आया, विपद हरो प्रभु मोरी ।
स्वयं सिद्ध साधन प्रदान कर, पार करो हे सद्गुरु देवा ॥



(४७)

मेरो मन गुरु चरतन में लागा
जब ते सद्गुरु दर्शन पाया, हर पल बना बैरागा
राग न मोह न शोक न व्यापे, मन चंचलता नाहीं
हर दम वृत्ति अन्तर्मुख ही, अन्तर आनन्द जागा
चेतनता है मन में परगट, क्रिया अनेकों करती
सद्गुरु सन्मुख बने रहत हैं, काम क्रोध सब भागा
गुरु अन्दर हैं, बाहर वो ही, गुरु जगत में व्यापे
गुरु बिना जग में नाहीं कुछ, ऐसा भाव है जागा
हरि गुरु जग में परकाशित, उसकी लीला सारी
जड़ को करता चेतनवत् वह, ध्यान है ऐसा लागा
विष्णुतीर्थ प्रभु सद्गुरु पूरा, चेतन शक्ति स्वामी
तीर्थ शिवोम् है किरिपा पाई, मन श्री चरणीं लागा



(४८)

तू मन में सोच ले भाई, तेरी उमरिया जात बिहाई
जगत भोग में धन को दीनों, प्रभु भजन नहीं कीनो
अन्त समय जब यम घेरेगा, नहीं कोई सुनत दुहाई
जग भोगों के कारण तूने, जीवन व्यर्थ गंवाया
अजहुँ समझ न आई तुझको, पीछे तू पछताई
कपट करे और करे दिखावा, सत्य कर्म नहीं कीनों
झूठी तृष्णा कारण तूने, आयु व्यर्थ गंवाई
विष्णुतीर्थ प्रभु शरण गहे तू, जीवन तेरा सुधरे
अब तक माया मोह में उलझा, अन्त समय नियराई
तीर्थ शिवोम् भजन गुरुवर का, तज तू झूठी माया
सत्य कर्म और हरि की सेवा, जनम सफल हो जाई



(४९)
पंजाबी

सारी दुनियां यार नुं लभे किदरे नजर न आवे ओह
समनाथाँई दिलवर वसदा बिन अखीं नज़र न आवे ओह
यारो यार कुकेन्दी खलकत पर दुनियां तों मुंह मोड़े न
बुकल बार ते लबदा नाहीं बिन लभयां यार क्यों पावे ओह
हर दम यार नूं लबन वाले मुरशद पैरी पेदे ने
रहबर बिना ओह मिलदा नाहीं कू कू करदे रहन्दे ओह
मैं बी लभन गई यार नूं किदरे नजरे न आया ओह
अन्दर झाती पायां मिलदा मुरशद बिन न लभदा ओह
सारे जग विच खेड रहया ओह अन्दर बाहर ओही ओह
लुक छुप बैठा करे इशारे अखीं नज़र न आन्दा ओह
मैं झल्ली जंगलां विच डोलां भंबल भूसे खा हारी
अजे यार न मिल्या मैंनूं ऐवें उमर गुजारी ओह
तीर्थ शिवोम् मैं किथे जावां किस नूं जाके मैं पुच्छां
सभने थाई वसदा हसदा पर किदरे नजर आवे ओह



(५०)

बेखुद बनाया हमको पिलाके शराब है
खुद मुहं छुपाए बैठा है, जैरे नक्राब है
पीना पिलाना हो गया परहेजे वस्ल क्यों
कुछ तो बताओ तो सही कैसा हज़ाब है
जालिम अदाएं छोड़ देखो हमारी हालत
आँखों से अशक बहते हैं, सीना कबाब है
दिल की हर झंकार में तेरा ही नाम है
जिस्म का हर रोम अब तेरा रबाब है
है किए सजदा पड़ा कदमों में यह शिवओम् अब
जल्वा दिखाओ दे उठा मुँह से नक्राब है



(५१)
पंजाबी

राह पी दा तकदी खड़ी खड़ी
दिलबर बिन दिल लगदा नाहीं, रात गुजारां खड़ी खड़ी
कद वापस मेरा दिलबर औसी, रौनक दिल विच होसी
रोज उडीकां ते राह मैं तकां, चाती पावां घड़ी घड़ी
मैं झल्ली बेअकली कीती, दिलों ओहनु विसराया
समझ आई, ते परले पावां, याद करेन्दी खड़ी खड़ी
करां सिंगार अन्दर दा अपने प्रीतम मेरा रीझे
दूजे पासीं मन नूं मोड़ा, लावां ओथे घड़ी घड़ी
जदों मेहर मुर्शिद दी होंदी, अन्दरीं चानन होया
मेरा प्रीतम, मेरे अन्दर लभदी अन्दर घड़ी घड़ी
न कुझ करना, न कुझ कहना, आस लगी प्रीतम दी
जग विच ते मन लगदा नाहीं, प्रीतम दे राह खड़ी खड़ी
विष्णुतीर्थ प्रभु रहमत तेरी, जनम सफल हो जावे
तीर्थ शिवोम है चरणीं लगा, होन्दी किरपा घड़ी घड़ी



(५२)

जिधर देखता हूँ जहाँ देखता हूँ
मैं तेरा ही जल्वा अयां देखता हूँ
पहाड़ों समुन्दर में जंगल बियाबां
मैं तेरी ही ताकत निहां देखता हूँ
कहीं बादशाह है कहीं है गदा तू
मैं तेरी ही सिफते जहाँ देखता हूँ
कहीं शोर बनता कहीं शोर सुनता
कहीं आब में भी रवां देखता हूँ
कि तेरी ही कुदरत से कायम जहाँ है
तेरा जल्वा हर सू अयां देखता हूँ
तू ही जागकर अपने बन्दों के अन्दर
है करता तमाशे अयां देखता हूँ
तू ही साफ करता है दिल तालिबों का
तुझे आशिकों में निहां देखता हूँ
मैं ढूँँ क्या तुझको फानी जहाँ में
मगर तुझको कल्बे निहां देखता हूँ
है रहमत गुरूवर की मुझ पर है ऐसी
शिवोम् जब जहाँ में पिन्हा देखता हूँ।



